२० णिधत्तमणिधत्ताणुयोगद्दारं

णमियूण सुपासजिणं तियसेसरवंदियं सयलणाणिं ।
वोच्छं समासदो हं णिधत्तमणिधत्तमणुयोगं ॥ १ ॥

णिधत्तमणिधत्ते त्ति अणुयोगद्दारे अत्थि पयडिणिधत्तं ट्ठिदिणिधत्तं अणुभागणिधत्तं पदेसणिधत्तं चेदि । तत्थि अट्ठपदं-- जं पदेसग्गं णिधत्तीकयं उदए दादुं णो सक्कं, अण्णपयडिं संकामिदुं पि णो सक्कं, ओकड्डिदुमुक्कड्डिदुं च सक्कं; एगंविहस्स पदेसग्गस्स णिधत्तमिदि सण्णा✪ । इममण्णं साहणं♣ । उवसामयस्स वा खवयस्स✠ वा सव्वकम्माणि अणियट्टिट्ठाणं पविट्ठस्स अणिधत्ताणि♥, तेसु णिधत्तलक्खणाणं सव्वेसिं विणासादो । अणंताणुबंधिणो विसंजोएंतस्स अणियट्टिकरणम्हि अणंताणुबंधिचदुक्कमणिधत्तं, सेसाणि▣ कम्माणि णिधत्ताणि अणिधत्ताणि च । दंसण⊗मोहणीयउवसामयस्स अणियट्टिकरणम्हि दंसणमोहखवगस्स अणियट्टिकरणे च दंसणमोहणीयं चेव अणिधत्तं✽, सेसाणि कम्माणि णिधत्ताणि अणिधत्ताणि च । एदेण अट्ठपदेण चउवीसअणुयोगद्दारेहि णिधत्तस्स अणिधत्तस्स च मूलुत्तरपयडीओ अस्सिदूण परूवणा कायव्वा । एवं णिधत्तमणिधत्ते त्ति समत्तमणुयोगद्दारं ।

त्रिदशेश्वर अर्थात् इन्द्रोंसे वन्दित और पूर्णज्ञानी ऐसे सुपार्श्व जिनको नमस्कार करके मैं संक्षेपमें निधत्तमनिधत्त अनुयोगद्वारका कथन करता हूं ॥ १ ॥

निधत्तमनिधत्त अनुयोगद्वारमें प्रकृतीनिधत्त, स्थितिनिधत्त, अनुभागनिधत्त और प्रदेशनिधत्त हैं। उनमें अर्थपद-- जो प्रदेशाग्र निधत्तीकृत है अर्थात् उदयमें देनेके लिये शक्य नहीं है, अन्य प्रकृतिमें संक्रान्त करनेके लिये भी शक्य नहीं है, किन्तु अपकर्षण व उत्कर्षण करनेके लिये शक्य है; ऐसे प्रदेशाग्रकी निधत्त संज्ञा है । यह अन्य साधन है। अनिवृत्तिकरण गुणस्थानमें प्रविष्ट हुए उपशामक अथवा क्षपक जीवके सब कर्म अनिधत्त हैं, क्योंकि, उनमें सब निधत्तलक्षणोंका अभाव है। अनन्तानुबन्धीकी विसंयोजना करनेवालेके अनिवृत्तिकरणमें अनन्तानुबन्धिचतुष्क अनिधत्त और शेष कर्म निधत्त व अनिधत्त भी हैं। दर्शनमोहउपशामकके अनिवृत्तिकरणमें और दर्शनमोहक्षपकके अनिवृत्तिकरणमें केवल दर्शनमोहनीय ही अनिधत्त है, शेष कर्म निधत्त व अनिधत्त भी हैं। इस अर्थपदके अनुसार मूल और उत्तर प्रकृतियोंका आश्रय करके निधत्त और अनिधत्तकी प्ररूपणा चौबीस अनुयोगद्वारोंके द्वारा करना चाहिये। इस प्रकार निधत्तमनिधत्त अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।

✪ देसोवसमणतुल्ला होइ निहत्ती निकाइया नवरं । संकमणं पि निहत्तीए णत्थि सेसाण वियरस्स ॥ क. प्र. ५, ७२. ♣ ताप्रतौ 'इमं सण्णं साहणं' इति पाठः । ✠ अ-काप्रत्योः 'खंधयस्स', ताप्रतौ 'खंध (खव) यस्स' इति पाठः । ♥ अप्रतौ 'अणिवणत्ताणि', काप्रतौ 'अणिवण्णत्ताणि' इति पाठः । ▣ अप्रतौ 'चदुक्कमणिवण्णसेसागि' काप्रतौ 'चदुक्कमणिवणसेसागि' इति पाठः । ⊗ अप्रतौ 'णिधत्ताणि अणिधत्ताणि अणिदत्ताणि च दंसण-', काप्रतौ 'णिधत्ताणि अणिधत्ताणि दंसण-', ताप्रतौ, 'णिधत्ताणि (अणिधत्ताणि) अणिधत्ताणि च दंसण' इति पाठः । ✽ अप्रतौ 'अणिधगत्तं', ताप्रतौ 'अणिध (ण) त्तं' इति पाठः ।